सत्य साहित्य

वर्ष 53 / अंक 3
जनवरी-मार्च
2015

मूल्य ₹ 5
सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी, करनी कछु न करी॥
औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँधि कै, अपने सीस धरी।
दारा-सुत-धन मोह लिये हैं, सुधि बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेग उबारो, अब मेरी नाव भरी॥
तुम मेरी राखो ----

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

जीवन डोरी सौंप दो, राम जी के हाथ में,
डगर डगर पर पाओगे राम जी को साथ में।

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नव वर्ष पर गुरुजनों का संदेश
- साधना सत्संग - आध्यात्मिक जीवन के व्यवहारिक सूत्र
- साधना सत्संग : गुरुजनों के श्रीमुख से
- परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- प्रश्न -उत्तर
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- अनुभूतियाँ
- कैलेन्डर 2015
- बच्चों के लिए

सब साधकों को आशिष।

श्री राम कृपा आप पर सदा बनी रहे।

आपका मंगलाकांक्षी
सत्यानन्द।

'नव वर्ष पर शुभ एवं मँगल कामनाएँ'

विश्वामित्र

यह मानव जन्म स्वयं नहीं मिला, परमात्मा द्वारा दिया वरदान है, अमूल्य दिव्य उपहार है। इसे इन्द्रियों को निरर्थक तुष्ट करने में संलग्न करना इस जीवन का दुरुपयोग है। ऐसा करने का हमें कोई अधिकार नहीं। यदि इसे अनुचित कार्यों के लिये प्रयोग करते हैं तो जीवनदाता का निरादर है। इसका सदुपयोग करें। राम नाम धन अर्जित व संचित करें, सद्विचार, सद्गुण, सत्कर्मों की पूंजी एकत्रित करें। यदि हमारा विश्वास अटूट हो तो नाम जप आकांक्षित फल अवश्य देता है। अग्नि में जिस प्रकार ज्वलनशील पदार्थों को जलाने की स्वाभाविक शक्ति निहित है, राम नाम में उसी प्रकार पापों–संस्कारों–वासना को भस्मीभूत करके जापक को आनन्द–शान्ति प्रदान करने की शक्ति निहित है। कलियुग में नाम–स्मरण, नाम जप ही प्रभु–प्राप्ति, मोक्ष एवं चिरस्थायी आनन्द प्राप्ति का सरल, आशु (swiftly), सुरक्षित एवं निश्चित साधन है। हमारे गुरुजनों ने इसी साधन को अपनाकर परमपद की प्राप्ति की तथा अपने इसी अनुभव के आधार पर ही, हम सबको राम राम जपते हुए अपने कर्त्तव्य कर्मों को निभाते रहने का आदर्श प्रस्तुत किया है। गुरु दक्षिणा के रुप में हमने अपने गुरुदेव के समक्ष ऐसा करते रहने का वचन भी दिया है। आज नव वर्ष के शुभागमन पर अपने दिए हुए प्रण को दृढ़तापूर्वक निभाने की शपथ लें कि राम नाम नित्य निरन्तर जपेंगे, अपने चरित्र का निर्माण करेंगे, पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे। अपने दोषों को, अपनी दुर्बलताओं को दूर करने का सुदृढ़ निश्चिय करेंगे, देहाभिमान रहित होकर अपने वास्तविक स्वरुप में स्थित रहेंगे। कैसी भी परिस्थिति हो, हम कहीं भी हों, कैसे भी हों, नाम की उपासना कभी नहीं छोड़ेंगे तथा समर्पित जीवन द्वारा ईश्वरानुभूति के लक्ष्य तक पहुँचेंगे। परमेश्वर श्री राम कृपा करें, बल दें, गुरुजनों के कल्याणकारी आशीष प्राप्त रहें ताकि उनके चरण चिन्हों पर चल सकें। शुभ एवं मँगल कामनाएँ।

नववर्ष की प्रथम प्रभात पर विश्व–भर में सभी साधक देवियों एवं सज्जनों को हार्दिक बधाई तथा शत् शत् नमन।

(वर्ष 2004 के आगमन पर दिया गया संदेश।) ■

साधना सत्संग - आध्यात्मिक जीवन के व्यवहारिक सूत्र

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि 'अध्यात्म भारत का प्राण तत्व है'। इसी प्राण–तत्व को जाग्रत करने के लिए पूज्यपाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने साधकों को नाम–दीक्षा दी और राम–नाम को उनके जीवन में रमाने तथा बसाने के लिए साधना–सत्संग का विधान किया। सन् 1936 में पहली बार हरिद्वार में साधना–सत्संग लगाया गया जो भीमगोड़े के पास अमृतसर वालों की धर्मशाला में लगा। तीन साधना–सत्संग होशियारपुर, लायलपुर और कपूरथला में लगे। फिर सांपला और हाँसी में साधना–सत्संग लगे। सन् 1950 से ग्वालियर में नियमित 5 रात्रि साधना–सत्संग लगने प्रारम्भ हुए। तत्पश्चात् परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में चैत्र पूर्णिमा पर सन् 1955 व 1956 में दिल्ली में क्रमशः दो साधना–सत्संग लगे। परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने सन् 1956 व्यासपूर्णिमा पर हरिद्वार श्रीरामशरणम् का उद्घाटन किया। फिर श्रीरामशरणम् हरिद्वार में नियमित साधना–सत्संग लगने लगे। तब से 5 रात्रि के साधना–सत्संग निरन्तर लगाए जाते हैं। विगत कुछ वर्षों से तीन रात्रि के साधना–सत्संग भी लगने लगे हैं।

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने दीक्षित साधकों की उन्नति हेतु, इन्हें सिधाने के लिए "साधना–सत्संग" लगाने आरम्भ किए, जहाँ साधक कुछ समय के लिए सांसारिक बंधनों से हट कर व परिवार से दूर जाकर क्रियात्मक practical साधना करते हैं। इससे उनकी उन्नति के मार्ग की बाधाएँ दूर होती हैं। यह पाठशाला के समान है जहाँ वे अनुशासन व नियमों का पालन करना सीखते हैं, साथ ही भजन करने का स्वभाव बनाते हैं। "युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु" (श्रीमद्भगवद्गीता 6/17)के अनुसार जीवन बनाते हैं।

साधना–सत्संग परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज की अनुपम देन है। इसके द्वारा साधक का जीवन नियमित बनता है। इसमें प्रातःकाल 4 बजे जागरण से लेकर रात्रि 10 बजे तक उसकी दिनचर्या कैसी होनी चाहिए – यह सिखाया जाता है। अखण्ड जाप में बैठने से नाम बसने लगता है जिससे ध्यान और जाप एक हो जाता है। यह तप बाहर–भीतर दोनों को अच्छा बनाता है। श्री राम–नाम आराधन से बुद्धि, मस्तक, शरीर का आत्मिक बल बढ़ता है, आत्मिक जागृति होती है।

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज का मूल उद्देश्य था राम–नाम आराधन द्वारा साधकों को भव–बन्धन से छुटकारा दिलाने योग्य बनाना। इसका अभ्यास साधक को स्वयं करना होगा। इसीलिए उन्होंने कहा "यह साधना है और आप अपने मास्टर आप ही हैं, यहाँ से जाकर भी यह बात आपके जीवन में बनी रहे, ऐसा ही मैं चाहूँगा।"

साधना–सत्संग श्री स्वामी जी महाराज की साधना–पद्धति का अविभाज्य अंग है। जिसके द्वारा एक साधक को आध्यात्मिक व्यक्तित्व में बदलने की कला सिखाई जाती है। वह मनमुखी से गुरुमुखी बनने की ओर अग्रसर होता है। राम नाम का आराधन उसे मन का दास बनने का समय ही नहीं देता। अपने बर्तन स्वयं साफ करना, अपने कपड़े स्वयं धोना, अपने शेष सारे काम स्वयं करना साधक को आत्म निर्भर बनाते हैं। इससे राग, द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध आदि विकार कम होते जाते हैं। भजन कीर्तन में गाए जाने वाले संतों के पद साधक की चिन्तन–धारा को अध्यात्म की ओर मोड़ते हैं। ऊँच–नीच का भाव, जाति–पाति का भाव, अमीर–गरीब का भाव समाप्त हो जाता है। स्वच्छता बाहर और भीतर बसने लगती है। जप की अधिकता के कारण नाम स्फुरित होने लगता है जो समस्त पाप–तापों को नष्ट करने का काम करता है।

प्रत्येक नवीन दीक्षित साधक को एक बार साधना–सत्संग में अवश्य जाना चाहिए और इस पद्धति को पूरे मनोयोग से सीख कर घर पर उसे अपने अभ्यास में लाकर जीवन का अंग बनाना चाहिए। श्री स्वामी जी महाराज के 5 रात्रि साधना–सत्संग बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। लगातार 5 दिन गुरुजनों के निकट सम्पर्क में रहने से शेष 360 दिन के लिए सार्थक जीवन जीने की कला सीखने को मिलती है। गुरुजनों के माध्यम से साधकों में शक्ति का संचार होता है एवं साधक वर्ष भर के लिए charge हो जाता है।

– एक वरिष्ट साधक ■

'Dawn of Self Awareness'

सत्यानन्द

All of you who are here for Sadhna-Satsang would know that you have to conduct yourselves in a manner that is different from the normal routine that you have been following. Here, the environment facilitates the flowering of the deepest emotional instincts. Once these are awakened, the sadhak's march towards his self-awakening gets propelled faster. For instance, one such instinct is being aware of the need for undergoing penance for some unbecoming 'act' performed in the past.

The answer is to make dedicated and conscious efforts that are inspired by the inner self and, to be sure, the results are indeed gratifying. The process has been explained by different awakened souls in their own way even as the saints and sages knew this process to be the work of cosmic 'energy'. I would urge you all to present yourself before the Supreme Soul alongwith your 'negative' emotional instincts. And, rest assured, you would gain immensely beyond your expectations.

Even though human beings are gifted with intrinsically strong emotional instincts, yet they mistakenly become fearful of 'death'. However, such negative and meaningless thoughts have to be overcome by sadhaks. The arrival of positive instincts emboldens, their absence, instead, allows the 'worldliness' to overpower the sadhak. Goswami Tulsidass Ji underscored very aptly: 'The worldliness dare not approach the devotees whose surrender to the Omnipotence of the Lord, the Supreme Soul, is complete and unequivocal'. The fact that the satsang facilitates the arousal of inner spiritual instincts, gets vindicated when the sadhak experiences varied feelings of ecstasy, gooseflesh - the body hair standing on their ends, extrasensory perceptions that become manifest to the sadhak gradually. Staying glued to the outside world hampers our inward journey. The satsang is the means to acquiring physical and spiritual discipline, and also to live that as an integral part of our daily life.

As is with the training camps for the scouts, military, etc., the objective is to acquire the skills of social service, for initiating reforms in community life. In like manner, sadhaks ought to imbibe the spiritual discipline for the arousal of deeper instincts of self-awareness. Learning to channelize worldly instincts facilitates spiritual growth. In satsangs, I always tend to underscore the relevance of being awakened and responsible citizens for understanding and making efforts for eradicating social maladies.

Since the messages transmitted by the Russian satellites happen to be coded, it is rather difficult for anybody else to understand the real meaning of the same. Likewise, looking at Sri Ganesha's idol, the elephantine trunk, a visible face seated on the rat: all these are indicative, their true import is known only to the sculptor. I often wonder, if inanimate objects can transmit messages, how is it that your consciousness that is vibrant and subtle, does not generate any proactive waves and sensations.

Even as the satellites are without any human control, yet they continue to send messages. As such, there is no reason why your messages and impulses, once concentrated in space, would not respond? While you must be reading the newspapers, I am rather casual about them. People share their experiences about the positive responses and the relief that they receive from their visits to prayer houses that abound in society. However, those desirous of offering prayers, they ought to have strong will, constantly build their character and should stay away from common vices. In fact, they should invoke divine benediction for constant guidance onto the path of moral uprightness and to tread the same with due care and caution. Since I have some personal understanding of the efficaciousness of prayer, per se, all those who affirm the same view, their views ought to be believed. All of you should seek His Grace and Blessings. Of late, I consciously undertake some such like spiritual initiative and also expect you to follow suit.

As a result, deeper spiritual instincts and impulses of sadhaks get aroused, refined and perfected. And, to be sure, divine benediction descends on sadhaks boundlessly.

(*Translation from Pravachan Piyush*, pp.423-424) ■

'साधक का व्यवहार'

साधना सत्संग में आने वाले को यह देखना चाहिए कि मेरे किसी के साथ खराब relation तो नहीं। मेरे मन में मन–मुटाव तो नहीं। कोई मुझे बात कहे तो मैं बरदाश्त कर सकता हूँ या नहीं ? मेरी समता बनी रहती है कि नहीं ? यदि अपने आपको सुधारा नहीं तो दूसरों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। साधना सत्संग में आने वालों में यह भावना होनी चाहिए कि जहाँ कहीं भी रहें, प्रेम से रहें।

अपने हृदय में क्षमाभाव होना चाहिए। कोई कुछ कहता है बुरा न मनाएँ– यदि कोई बहुत हठ करता है तो कह देवें आप गुस्सा न हुआ करें। मैं मान जाता हूँ। समझाने वाले बहुत होते हैं, पर practical कोई करता है। जो वैर विरोध है– परमेश्वर से क्षमा माँगे कि मेरा किसी के साथ वैर न हो– जो भक्त होते हैं सदा निर्वैर होते हैं। सदा सम रहते हैं। उनमें ऊँच–नीच, लाभ–हानि के भेद–भाव नहीं होते। जब फूल खिलता है तो सुन्दरता की मुस्कान खुद आ जाती है। इसी तरह राम नाम का जो आराधन करता है उसका मुख मण्डल महकता ही होना चाहिए। यदि यह बातें नहीं– हमेशा कुढ़ता रहता है तो उसे समझना चाहिए कि वह परमेश्वर से बहुत दूर है। संसार में सब तरह के समय आया करते हैं। परमेश्वर की कृपा का पात्र समझ कर उसी का नूर सबमें समझें। यदि फिर भी कोई ऐसा बरताव करता है डाँवाडोल न हो जाएँ।

हरिद्वार, नील धारा

प्रयत्न करें कि प्रार्थना करके उसे सुधारें। परमेश्वर इसे माया से निकाल, जितना भी हो सके। आराधन करना चाहिए। हम यहाँ जो उपस्थित होते हैं, महाराज (श्री स्वामी जी महाराज) कहा करते जो अखण्ड जाप होते हैं एक तरह की प्रार्थना ही है– तरंगें दूर–दूर तक काम करती हैं, नास्तिक पर भी असर होता ही है। मँगल होगा अपना भी, उसका भी। राम नाम का आराधन करके दूसरों के अवगुणों पर न जाएँ। नम्रता से बरदाश्त करें। परमेश्वर तू कृपा कर सबमें बंधुभाव हो, कोई पराया न समझें। परमेश्वर तू कृपा कर कि मेरे हृदय में सबके लिए प्यार हो, परमेश्वर तेरी कृपा हो, कृपा हो, कृपा हो।

(परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा नोट किया गया परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का प्रवचन, साधना सत्संग, हरिद्वार 9–14 अप्रेल 1968) ■

'साधना सत्संग'

विश्वामित्र

हर किसी का मन होता है कि हरिद्वार का साधना सत्संग attend करने को मिले, होवे क्यूँ न, सारे संसार में एक ही श्री रामशरणम् है, जहाँ पर पूज्यपाद स्वामी जी महाराज और परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के नेतृत्व में साधना सत्संग लगा करते थे। आज भी वही परम्परा चल रही है। भगवती भागीरथी का किनारा है संसार भर से सभी साधकों का बहुत मन होता है कि हरिद्वार का साधना सत्संग ज़रुर attend करें। कोशिश भी यही की जाती है कि हर एक को अवसर मिले। थोड़े स्पष्टीकरण करने की ज़रुरत है। एक, स्वामी जी महाराज रोगियों के नाम नहीं रखा करते थे। दो, अति वृद्ध के नाम नहीं रखा करते थे।

वहाँ हमने साधना करने जाना होता है – तपस्थली कहा जाता है। क्यों तपस्थली कहा जाता है? नाम ही साधना सत्संग है –तो तपस्या करने के लिए जाना होता है। प्रातः 4 बजे जागरण की घंटी बजती है ताकि जल्दी उठने की आदत पड़ सके। स्वामी जी महाराज की आन्तरिक भावनाओं को देखिए, मात्र पाँच दिन जगने से काम बन जाएगा ? नहीं, वह पाँच दिन में जो सीखते हैं उन्हें घरों में आकर apply नहीं करते तो कोई फ़ायदा नहीं। जितने मर्ज़ी साधना सत्संगों में सम्मिलित हो लो। 5 से 6 बजे वहाँ ध्यान व भजन कीर्तन होता है। बहुत से साधक यहाँ जिन्होंने 5 बजना कभी देखा ही नहीं, लेकिन वहाँ तो 5 से 6 भजन कीर्तन की बैठक होती है। 4 बजे जगना होता है। घर आकर ये चीज़ें निभाई नहीं जातीं। मेरे गुरुजनों को यह अच्छा नहीं लगता, मानो सीखा कुछ नहीं। उन्हें लगता है वहाँ साधना सत्संग में हाज़री लगानी ही बहुत जरुरी – नम्बर बढ़ाना जरुरी है। 6 बजे चाय मिल जाती है। उसके बाद सब नीलधारा जाते हैं, बहुत अच्छा लगता है, हाथ में माला होती है, राम राम जपते जाते हैं, राम राम जपते आते हैं। आपस में कोई बातचीत नहीं करते। हरिद्वार के निवासी बहुत प्रभावित होते हैं कि देखो ये कैसे जाप करते जाते हैं किसी से बातचीत नहीं करते। 8 बजे दूध एवं दलिये का नाश्ता मिल जाता है। मैं अर्ज़ कर रहा हूँ, क्यों इसे तपस्थली कहा जाता है। घरों में शायद कभी साल में एक बार दलिया खाते होंगे, वहाँ 5 दिनों में रोज़ दो दफ़ा मिलता है। **ये स्वामी जी के नियम हैं। कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकेगा, ये ऐसे के ऐसे ही रहेंगे जो स्वामी जी महाराज ने चलाए हुए हैं।**

अगली बैठक 9.30 से 10.30 सामूहिक ध्यान की, जिसमें 15–15 मिनट के लिए सामूहिक ध्यान होता है। 11 से 11.30 श्री भक्ति प्रकाश जी का पाठ, उसके बाद दोपहर का भोजन मिल जाता है। जितना मिलता है उतना ही लेना होता है, अधिक माँग नहीं सकते, जूठ छोड़ नहीं सकते, अपने बर्तन आपको स्वयं साफ़ करने होते हैं। 1 से 3 मौन का समय रखा है, चुप रहिएगा, अपनी आदतें सुधारनी हैं, इसीलिये साधना सत्संग। घरों में जो गलत आदतें बनी हुई हैं, ऊँची–ऊँची बोलने की, ये अच्छी नहीं, यहाँ बदलने का सुअवसर प्रदान करते हैं। इस बैठक में जिह्वा से और मन से मौन रहने की चेष्टा करनी है, सोना नहीं। सबसे लम्बी बैठक मौन का समय।

3.30 बजे श्री अमृतवाणी पाठ व प्रवचन, 4.30 बजे चाय मिल जाती है, शाम का 6 से 7 बजे या 6.30 से 7.30 बजे ध्यान व भजन कीर्तन, अन्तिम बैठक 8.30 से 9.30 बजे। थोड़े से चुटकले सुन लिए जाते हैं। भजन कीर्तन होता है। 10 बजे विश्राम की घंटी बज जाती है।

दिन भर 6 बैठकें, उसके अतिरिक्त गिनती का रोज़ 20,000 जाप, एक घंटा अखण्ड जाप के कमरे में डयूटी देनी होती है। महिलाओं, आप सीढ़ी चढ़ सकती हैं या नहीं यह नहीं देखा जाता, आपको करना ही है। यह स्वामी जी महाराज का नियम है, आपको किसी प्रकार की छूट नहीं दी जा सकती। पुरुष बेचारों को रात को बीच में जागकर जाप की ड्यूटी देनी होती है। गीताजी का पाठ भी करना होता है, तपस्या का समय है इसलिए यदि आपकी आयु और सेहत आपको allow नहीं करती, आपका नाम न आए तो बुरा न मानिएगा। बहुत सी चीज़ें देखनी होती हैं, कुछ साधकों को तो मेरे गुरु जन निमन्त्रण देते हैं। श्री अमृतवाणी का नेतृत्व

मनाली कुटिया

ऐसे साधकों के मन में यही नहीं आया कि दूसरों को भी मौका मिलना चाहिए तो मैं समझता हूँ वे बेचारे अध्यात्म में तो बहुत गरीब हैं। यहाँ पैसे की अमीरी गरीबी तो नहीं देखी जाती, पर यह गरीबी तो देखी जाती है। स्वामी जी महाराज के वक़्त के साधक – अध्यात्म में गरीब कोई हो तो बहुत दु:ख होता है। मानो उन्होंने बहुत सी जिन्दगी अपनी ज़ाया कर दी। गए तो हैं अनेक बार हरिद्वार, वहाँ हाज़िरी तो लगाई है लेकिन पाया कुछ नहीं है। बैठने के लिए वहाँ पर मूढ़े या कुर्सियाँ नहीं हैं, कभी होंगी भी नहीं, इतनी जगह ही नहीं है। सबको नीचे बैठना होता है, नीचे ही सोना होता है, इसलिए आप जी से अर्ज़ की जा रही है कि वह तपस्थली है, तपस्या करने के लिए जाना है, यदि सेवा का अवसर मिलता है तो आप जैसा भाग्यवान कोई नहीं। वहाँ जाकर सेवा करनी है, करवाने नहीं जाना। वृद्ध एवं रोगियों को स्वामी जी महाराज इतनी आसानी से प्रवेश नहीं दिया करते थे।

करना होता है, श्री भक्तिप्रकाश जी का नेतृत्व करना होता है, सेवा करनी होती है, भजन गाना होता है, व्यवस्था देखनी होती है, उनका जाना तो जरुरी है।

देखना यह भी है कि नीचे (Ground floor) जिनको रखना होता है, जिनकी demand नीचे की है उनके लिए उतनी जगह है भी या नहीं। हम जगह create नहीं कर सकते, महिलाओं के लिए fix जगह है। अब वहाँ कोई expansion का scope नहीं है। पुरुषों को नीचे रखने की जगह बहुत कम है, यह difficulties आपके सामने रख रहा हूँ, कोई आवश्यकता तो नहीं थी। लेकिन कुछ छुपाने की बात भी नहीं। आप सबसे निवेदन करुँगा कि आप हर सत्संग में अपना नाम दे देते हो, हर साल, न जाने कितने सत्संगों में आपका जाने का मन करता है, for what? – आज तक यदि

संसार भर से नाम आते हैं, कई सारी कठिनाइयाँ हैं। जिन साधकों के नाम आ जाते हैं उन्हें नियमों का बहुत पालन करना पड़ता है। * वहाँ पर बहुत strictness है। परम पूजनीय स्वामी जी महाराज और परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का वहाँ का रुप और बाकी समय का रुप – आपस में कोई comparison नहीं। बड़ा कठोर रुप होता है उन दिनों –स्वभावत: वैसे नहीं हैं, लेकिन उन दिनों ऐसा कठोर रुप धारण करना पड़ता है–to maintain the discipline। सिखाने के लिए भी और अन्य सीख सकें, सब नियमों का पालन करें discipline में रहें, इसलिए स्वयं भी कठोर बनना पड़ता होगा। (21.9.08)

** (परम पूजनीय स्वामी जी महाराज द्वारा निर्धारित साधना सत्संग के नियमों की सूची वेब साईट पर है)* ■

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण

एक साधना सत्संग में लगभग 3 बजे प्रातः का समय – स्वामी जी महाराज के कमरे से आवाज़ आई तो एक साधक ने द्वार की दरार में से झाँका तो देखा एवं सुना कि स्वामी जी कह रहे हैं – हे देवाधिदेव! मेरे सर्वशक्तिमान दयालु, कृपालु परमेश्वर – ये सब तेरे हवाले हैं, तू इनका मँगल एवं कल्याण कर, इन सबका उद्धार हे प्रभु! तेरे हाथों में है, मैंने इन्हें तुम्हें सौंप दिया है।

ये 3–4 साधक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के साथ एक ही कमरे में थे, रोज़ देखें की ढाई बजे प्रेम जी महाराज गायब। अखण्ड जाप के कमरे में भी नहीं, देखा कि स्वामी जी महाराज के बन्द कमरे की दहलीज़ पर मस्तक टिकाए पड़े हैं। प्रतिदिन लगभग एक घण्टा ऐसे ही रहते। स्वामी जी के विशेष कृपा पात्र।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से) ■

परम पूजनीय श्री महाराज़ जी का प्रथम साधना सत्संग

(व्यास पूर्णिमा 27 जून से 2 जुलाई 1966)

साधना सत्संग आरम्भ होने से काफी दिन पहले पूज्य महाराज जब भी स्कूटर पर मुझे हॉस्टल छोड़ने आते तो पूछते कि साधना सत्संग अटैंड करेगा? मैं यही कहता, "महाराज जी ! मैं इतना अच्छा कहाँ कि ऐसे शुभ अवसर अवेल कर सकूँ, न जाने वहाँ पर कितने अच्छे–अच्छे लोग आकर सम्मिलित होते हैं। मैं वहाँ जा कर क्या करुँगा?" उत्तर में महाराज जी यही फ़रमाते,"तुझे अच्छा लगेगा।" अन्त में उन्होंने मना ही लिया। छुट्टी का भी प्रबन्ध करवा दिया। एक दिन पहले मैंने पूछा,"आप कब जाएँगे व कैसे"? मुझे उत्तर मिला, "तू कब जाएगा?" "अन्तिम बस द्वारा जाऊँगा।" मुझसे तो वह बस मिस हो गई, परन्तु हरिद्वार जा कर पता चला कि पूज्य महाराज उसी बस द्वारा आए थे। मैं अगले दिन पहुँच गया। एक कुर्ता पायजामा सिलवाया हुआ था– महाराज जी को हॉस्टल में दिखाया था, देख कर प्रसन्न हुए कि बहुत अच्छा किया। स्वामी जी को बहुत अच्छा लगा करता था।

वहाँ पर पूज्य महाराज लिस्ट लेकर खड़े थे, महाराज जी ने कहा,"यदि दिल्ली वालों के साथ ठहरना है तो 17 न. में और यदि डॉ. गुलाटी जी के साथ तो 16 न. में।" मैं 16 न. में ठहरा।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से)

साधना सत्संग के विषय पर परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर

(परम पूजनीय महाराज जी के साथ साधकों के पत्रचार के अंश)

प्र. महाराज जी, कृपया हमें साधना सत्संग में सम्मिलित होने की अनुमति दें।

पूजनीय महाराज जी : आप दोनों का 15–18 नवम्बर, हरिद्वार में होने वाले साधना सत्संग में स्वागत है। परन्तु क्या आपको साधना सत्संग और अन्य सत्संग जिसमें आपने भाग लिया है, में अन्तर पता है? क्या आप साधना सत्संग में होने वाली असुविधाओं को सम्भाल पाएँगे? बहुत सख्त नियम हैं ... । साधना सत्संग घरों में आयोजित नहीं होते। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, साधना सत्संग में सम्मिलित होने का मौका देने के लिए धन्यवाद।

पूजनीय महाराज जी : हरिद्वार साधना सत्संग में आपको इतने करीब से देखना बहुत आनन्दमयी था। आपने साधना सत्संग का भरपूर आनन्द लिया। आशा है आप ज़्यादा से ज़्यादा इसे अपने जीवन में उतारें, जिससे वह शान्तिमय, परमानन्दमयी और उद्देश्यपूर्ण बने। प्रभु राम कृपा करें ....। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, कृपया हमें साधना सत्संग में भाग लेने की अनुमति दें।

पूजनीय महाराज जी : आपको 28 सितम्बर से 3 अक्तूबर, हरिद्वार में होने वाले साधना सत्संग में सम्मिलित होने का समाचार देना, मेरे लिए आज का सबसे सुखद समाचार था। आपका स्वागत है। आपका नाम अन्तिम सूची में शामिल कर लिया गया है। आपकी सत्संगति से मुझे बहुत आनन्द मिलेगा। क्या आप अकेले आ रहे हैं? आप दोनों को नमस्कार।

प्र. महाराज जी, मुझे साधना सत्संग में बहुत आनन्द आया।

पूजनीय महाराज जी : मेरे प्रिय –– सप्रेम जय जय राम। साधना सत्संग हरिद्वार में होने वाला आपका अनुभव, अद्भुत और सच्चा था. . .। सच तो यह है कि आपको अपनी दैवीय क्षमताओं को manifest करने का मौका मिला। ठीक उसी तरह जिस प्रकार एक मूर्तिकार के तराशने से चट्टान में छिपी मूर्ति उजागर हो जाती है। आपके साथ रहकर मुझे सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई। मेरे प्रभु! मुझे ऐसे कई और अवसर दें। आप सबको सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, कृपया मुझे साधना सत्संग में सम्मिलित होने की अनुमति दें। यहाँ बहुत नकारात्मकता है।

पूजनीय महाराज जी : कृपया साधना सत्संग के लिए आएँ। इसमें कोई चूक नहीं है कि विचार, शब्द और कर्म परमात्मा की ओर मुड़ जाएँगे। इससे आपका सम्पूर्ण उत्थान होगा। शुभ कामनाएँ।... सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, मुझे स्वयं को एकाग्र होने में कठिनाई आ रही है।

पूजनीय महाराज जी : होली सत्संग में आपको संतोषपूर्ण ध्यान लगाने में सहायता मिलेगी। उसको निरन्तर याद करने का प्रयत्न करें। सांसारिक विचारों से बचें। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी, हम यहाँ सत्संग शुरु करना चाहते हैं। कुछ लोग खाने के साथ ही सत्संग का आयोजन करते हैं कृपया बताएँ हमें क्या करना चाहिए।

पूजनीय महाराज जी : श्री अमृतवाणी का पाठ पूरे विश्व में लाखों लोग करते हैं। उतना ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है साधकों को स्वामी जी महाराज के सिद्धान्त, नियम और सीख से अवगत कराना। यदि हम दोनों को निभा दें तो अधिकतम लाभ मिलेगा। सत्संग मात्र मिलना–जुलना या बैठक नहीं है। यह शान्ति की जगह और शान्ति का माध्यम है। कृपया इस सेवा को वैसे करें जैसा वह चाहता है। आप सभी को स्वामी जी के जीवन के नियम और प्रभु राम की महिमा एवं मूल्य समझाने का प्रयत्न करें। आप सभी को सप्रेम नमस्कार।

(महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं। प्रश्नकर्ता की गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रश्नों को आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत संशोधित किया गया है।) ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अक्तूबर से दिसम्बर 2014

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

हरिद्वार में 24 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक रामायणी साधना सत्संग हुआ।

झाबुआ में शारदीय नवरात्री 2014 में ''मौन साधना'' का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 24 करोड़ जाप हुआ। आसपास के अन्य क्षेत्रों में भी जाप आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 21 करोड़ जाप हुआ।

लुधियाना, पंजाब में 5 अक्तूबर को विशेष श्री अमृतवाणी सत्संग के पश्चात् 100 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

अब्बदुल्लागंज, मध्य प्रदेश, में 8 अक्तूबर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के उपरान्त 1735 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

अमृतसर, पंजाब, में 12 अक्तूबर को एक दिवसीय खुले सत्संग के पश्चात् 108 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

जम्मू में 17 से 19 अक्तूबर को खुला सत्संग हुआ, जिसमें 19 अक्तूबर को 354 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

सुजानपुर, पंजाब, में 26–27 अक्तूबर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 188 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

पठानकोट, पंजाब में साधकों के ठहरने के लिए हॉल एवं कमरों का निर्माण कार्य पूरा हो गया, 1–2 नवम्बर को खुले सत्संग में 300 साधक यहाँ ठहरे। 297 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हिसार, हरियाणा, में 2 नवम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

जालन्धर, पंजाब में 9 नवम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 363 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

बैगलूर, कर्नाटक में 9 नवम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 307 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

चम्बी, हिमाचल प्रदेश, में 10 नवम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन के पश्चात् 52 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

हरिद्वार में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।

दिल्ली, न्यू राजेन्द्र नगर में 21 नवम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी संकीर्तन व प्रवचन का आयोजन हुआ।

फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब, में 22 व 23 नवम्बर को खुला सत्संग हुआ। जिसमें 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

ग्वालियर, म.प्र में 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर को साधना सत्संग हुआ उसमें 415 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

कोलकत्ता में 6 दिसम्बर को विशेष श्री अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 62 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान में 7 दिसम्बर 2014, को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्‌घाटन हुआ जिसमें 306 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग 2500 व्यक्ति अलग–अलग राज्यों से सम्मिलित हुए। इससे पहले 6 दिसम्बर से 27 घण्टों के अखण्ड जाप में लोगों ने हर्षोल्लास से भाग लिया। साधकों ने वहाँ परम पूजनीय श्री महाराज जी की उपस्थिति को महसूस किया। 51 लाख जाप हुआ। श्री रामशरणम् के उद्‌घाटन के बाद से दैनिक सत्संग में लोगों की संख्या बढ़ रही है।

दिल्ली में अक्तूबर और नवम्बर के माह में 81 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

परम पूजनीय श्री महाराज जी के तिलक दिवस (9 दिसम्बर, 1993) के अवसर पर विश्व भर के श्रीरामशरणम् में विशेष कार्यक्रम रखे गए। जिनमें सभी साधकों ने भाव–चाव से भाग लिया।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

सुजानपुर, पंजाब में 350 साधकों के ठहरने के लिए दो मंज़िले भवन में कमरों का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

तिब्बड़, पंजाब श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है और लैंटर तक का कार्य हो गया है।

सतना, म.प्र में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा होने की आशा है। उद्घाटन 21 मार्च 2015 में होगा।

नरोट मेहरा, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा होने की आशा है। उद्घाटन 26 मार्च 2015 में होगा।

दिल्ली श्रीरामशरणम् कमरा न. 108

श्रीरामशरणम् दिल्ली, कमरा न. 108 में तीनों गुरुजनों की तस्वीरें एवं उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तुएँ रखी गई हैं। इस कमरे को प्रत्येक रविवार सत्संग के पश्चात् आधे घण्टे के लिए खोला जाता है। ■

श्री रामशरणम्, पीलीबंगा

दिल्ली श्रीरामशरणम् कमरा न. 108

ग्वालियर, साधना सत्संग – समाचार पत्र की रिपोर्ट

नईदुनिया ग्वालियर, रविवार 30 नवंबर 2014

मृत्यु को हमेशा याद रखिए

श्रीरामशरणम में डीवीडी के माध्यम से हुए ब्रह्मलीन डॉ. विश्वामित्र के प्रवचन

ग्वालियर। दुनिया के सबसे बड़े आश्चर्य दो ही हैं, मृत्यु और परमात्मा को याद न रखना। इस संसार में दो चीज याद रखने की हैं एक परमात्मा और दूसरी मृत्यु। यह बात ब्रह्मलीन डॉ. विश्वामित्र महाराज ने शनिवार को यहां श्रीरामशरणम माधव सत्संग आश्रम में चल रहे साधना सत्संग के दौरान डीवीडी के माध्यम से विशेष अमृतवाणी सत्संग में कही। डॉ. विश्वामित्र महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि मृत्यु को इसलिए याद रखने की जरूरत है एक तो इससे सदैव परमात्मा का स्मरण होता है, दूसरा मनुष्य पाप कर्म से बचा रहता है। उन्होंने बताया कि व्यक्ति दूसरों की मृत्यु होते हुए देखता है, लेकिन अपनी मृत्यु उसे याद नहीं रहती यही दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य है।

डॉ. विश्वामित्र महाराज ने कहा कि यह शरीर नश्वर है। इसे नष्ट होना ही है। इसके अलावा हम जिनके साथ हमेशा चिपके रहना चाहते हैं वे शरीर संबंधी भी नष्ट होने वाले हैं। हमारा शाश्वत संबंध सिर्फ परमात्मा के साथ है, लेकिन सबसे बड़ी विडंबना है कि जिसको याद रखना चाहिए उसे ही भूल जाते हैं।

आज भी होगा खुला सत्संग और नाम दीक्षा

श्रीरामशरणम माधव सत्संग आश्रम में आयोजित सत्संग में प्रवचन सुनते भक्त।

परमेश्वर को भूलना सबसे बड़ी विपत्ति

- प्रवचनों में डॉ. विश्वामित्र महाराज ने कहा कि किसी संबंधी का मर जाना, व्यापार-धंधे में घाटा होना यह कोई बड़ी भारी विपत्ति नहीं है। संसार की सबसे बड़ी विपत्ति तो परमात्मा का विस्मरण है। परमेश्वर का स्मरण ही सबसे बड़ी संपत्ति और सुख है। व्यक्ति सांसारिक परेशानियों से निजात पाने के लिए न जाने कहां-कहां भटकता है, लेकिन उस विपत्ति का क्या करें। जब हमें ईश्वर याद नहीं आता। आंकलन करें हम 24 घंटे में ईश्वर को कितना याद करते हैं।

'Sadhana Satsang - A Pilgrimage with my Guru'

'October, 1999, the celebrated Kartik month was on, when lunar influence looms large over people, so I was also besieged with noise and chaos of materialism. I went to my Guru Swami Dr. Vishwamitter Ji Maharaj to seek guidance and blessings for my personal spiritual endeavour. I told my guru I wanted to go for 2-3 days seclusion away from the maddening crowd. He asked 'Do you need me there?' I wondered, yet I muttered 'How could I demand this.' Then he asked me to join Sadhana Satsang and asked me to spare only three nights. He further assured me 'I would show you something which you have never seen in your life'. Suddenly I realized my Pilgrimage had begun!

The communication started with introduction of the concept called sadhana. Param Pujniya Maharaj Ji uttered that it is with God's grace and the blessings of Param Guru one is allowed to do sadhana. This Sadhana at one level is ordained by God 'Shree Ram' and Ram 'Kripa' befalls when a Sadhak does the spiritual exercise honestly and sincerely.

The meditation hours in the morning and evening were under the guidance of Guru and I was able to concentrate on the third eye. In these sessions I experienced a trembling; serpentine elevating movement emitting from lower spinal cord and some silent engrossed moments. These were some of the highlights of my spiritual quest. Furthermore, in the fifteen minutes of special meditation session I could see the dynamics of blue light dancing with a shadow at my third eye. Striking a conversation with Shree Ram dwelling inside was one of the high points of experiencing dhyan. However, the most striking hour of Sadhana was when the Jyoti was brought from Akhand jap room to the main hall which was used for the Aarti of Shree Adhistanji. As the Sadhana went on attachment for worldly pleasure got distanced.

Today when I look back I only wonder how a gathering of two hundred odd devotees could not cause any noise or chaos while in contrast in small families of ours we have so much noise and commotion!

When I came back I experienced a kind of "Viraha" or parting from the dear ones. The regret of retreating to the karmic world, material world was looming large on my mind as maya was awaiting our return from the sacred sojourn !' ■

'वही मुझमें हैं और मैं उनमें हूँ'

'पूज्य गुरुजनों की असीम कृपा से मुझे हरिद्वार एवं अन्य जगहों पर साधना सत्संग में सम्मिलित होने का अवसर मिला है। प्रत्येक साधना सत्संग में मुझे अत्यन्त आत्मिक संतोष एवं परमानंद की अनुभूति हुई। मैं साधना सत्संगों में हमेशा निःस्वार्थ प्रार्थना के साथ गई और हर बार प्रवचन ने मेरे विचारों की गहराई को छू लिया। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि साधना सत्संग मेरे लिए ही आयोजित किया गया हो और मेरे गुण और अवगुण पर पूरी स्पष्टता एवं सम्पूर्णता से चर्चा की गई हो।

एक साधना सत्संग के दौरान मुझे सबसे अद्‌भुत अनुभव हुआ। पूजनीय महाराज जी के लिए मैंने एक प्रश्न लिखा था, ''गुरु एवं ईश्वर में क्या अन्तर है? कृपया स्पष्ट करें।'' मैंने अपनी ओर से इसका जवाब भी लिख दिया था यह सोचकर कि यदि मुझसे पूछा जाएगा तो मैं क्या बताऊँगी। मैंने लिखा,'' गुरु ईश्वर नहीं परन्तु उसका ईश्वर से एकात्म हो चुका है।''

(परम पूजनीय महाराज जी को इसकी जानकारी नहीं थी, क्योंकि मुझे उनके एकान्त दर्शन का अवसर नहीं मिला था।)

सत्संग की अन्तिम संध्या सभा में मैं आगे की पंक्ति में बैठी थी। हमेशा की तरह मैं परम पूजनीय महाराज जी के प्रवचन को उतारने में व्यस्त थी। अचानक मैंने अपना नाम सुना, सर उठाया और देखा कि परम पूजनीय महाराज जी उँगली से मेरी ओर इशारा कर रहे हैं और देख रहे हैं। उन्होंने समझाया... ''आप तो पढ़े लिखे हैं। आपने भगवद्‌गीता अध्याय नौ, श्लोक 19 में यही तो पढ़ा है कि, जो जन मुझे भक्ति से भजते हैं, वही मुझमें हैं और मैं उनमें हूँ''।' ■

साधना सत्संग (2015)			
1	24 से 27 जनवरी	शनिवार से मंगलवार	इन्दौर
2	6 से 9 फरवरी	शुक्रवार से सोमवार	हाँसी
3	13 से 16 मार्च	शुक्रवार से सोमवार	हरिद्वार
4	31 मार्च से 5 अप्रेल	मंगलवार से रविवार	हरिद्वार
5	30 जून से 3 जुलाई	मंगलवार से शुक्रवार	हरिद्वार
6	26 से 31 जुलाई	रविवार से शुक्रवार	हरिद्वार
7	30 सितम्बर से 3 अक्तू.	बुधवार से शनिवार	हरिद्वार
8	5 से 8 अक्तूबर	सोमवार से गुरुवार	हरिद्वार (झाबुआ साधकों के लिए)
9	13 से 22 अक्तूबर	मंगलवार से गुरुवार	हरिद्वार रामायणी
10	11 से 14 नवम्बर	बुधवार से शनिवार	हरिद्वार
11	27 से 30 नवम्बर	शुक्रवार से सोमवार	ग्वालियर

खुले सत्संग (2015)			
1	3 से 4 जनवरी	शनिवार से रविवार	मुम्बई
2	11 से 13 जनवरी	रविवार से मंगलवार	झाबुआ
3	20 से 22 फरवरी	शुक्रवार से रविवार	बिलासपुर हि.प्र.
4	4 से 6 मार्च	बुधवार से शुक्रवार	दिल्ली होली
5	5 अप्रेल	रविवार	मण्डी
6	25 से 26 अप्रेल	शनिवार से रविवार	सुबा, फिज़ी
7	2 से 3 मई	शनिवार से रविवार	बा, फिज़ी
8	14 से 16 जून	रविवार से मंगलवार	मनाली
9	24 से 28 जून	बुधवार से रविवार	अमेरिका
10	11 से 12 जुलाई	शनिवार से रविवार	हिसार
11	15 से 16 अगस्त	शनिवार से रविवार	रोहतक
12	5 से 6 सितम्बर	शनिवार से रविवार	रतनगढ़
13	18 से 20 सितम्बर	शुक्रवार से रविवार	गुरदासपुर
14	25 से 27 सितम्बर	शुक्रवार से रविवार	सिडनी अस्ट्रेलिया
15	9 से 11 अक्तूबर	शुक्रवार से रविवार	जम्मू
16	24 से 25 अक्तूबर	शनिवार से रविवार	रेवाड़ी
17	1 नवम्बर	रविवार	अमृतसर
18	7 से 8 नवम्बर	शनिवार से रविवार	पठानकोट
19	21 से 22 नवम्बर	शनिवार से रविवार	कपूरथला
20	19 से 20 दिसम्बर	शनिवार से रविवार	सूरत
21	26 से 27 दिसम्बर	शनिवार से रविवार	सुजानपुर

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली में नाम दीक्षा की तिथियाँ (जनवरी से मार्च 2015)			
1	18 जनवरी	रविवार	प्रातः 11.00
2	1 फरवरी	रविवार	प्रातः 11.00
3	8 मार्च	रविवार	प्रातः 11.00

अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (जनवरी से मार्च 2015)			
1	4 जनवरी	रविवार	मुम्बई
2	9 जनवरी	शुक्रवार	दाहोद,गुजरात
3	10 जनवरी	शनिवार	कुशलगढ़,राजस्थान
4	11 जनवरी	रविवार	झाबुआ
5	25 जनवरी	रविवार	इन्दौर
6	1 फरवरी	रविवार	रोहतक
7	8 फरवरी	रविवार	हाँसी
8	15 फरवरी	रविवार	भोपाल
9	22 फरवरी	रविवार	बिलासपुर हि.प्र.
10	28 फरवरी	शनिवार	पुणे
11	1 मार्च	रविवार	कोल्हापुर, महाराष्ट्र
12	21 मार्च	शनिवार	सतना, म.प्र.
13	26 मार्च	गुरुवार	नरोट मेहरा

पूर्णिमा की तिथियाँ (जनवरी से मार्च 2015)		
1	5 जनवरी	सोमवार
2	3 फरवरी	मंगलवार
3	5 मार्च	गुरुवार

नोट :

रोहतक में 1 जनवरी से 1 फरवरी तक अखण्ड जाप का आयोजन होगा।

भोपाल, म.प्र. में 13–14–15 फरवरी, शुक्रवार से रविवार को श्री रामायण जी का पाठ होगा।

पुणे में 28 फरवरी को अमृतवाणी सत्संग एवं नाम दीक्षा होगी।

कोल्हापुर में 1 मार्च को अमृतवाणी सत्संग एवं नाम दीक्षा होगी।

दिल्ली में परम पूजनीय श्री महाराज जी के अवतरण दिवस 15 मार्च, के उपलक्ष्य में प्रातः साप्ताहिक सत्संग के बाद श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ आरम्भ होगा इसकी पूर्ति 16 मार्च को प्रातः 7 से 8 भजन, कीर्तन व प्रवचन के साथ होगी।

Please find the way to Shree Ram Sharnam

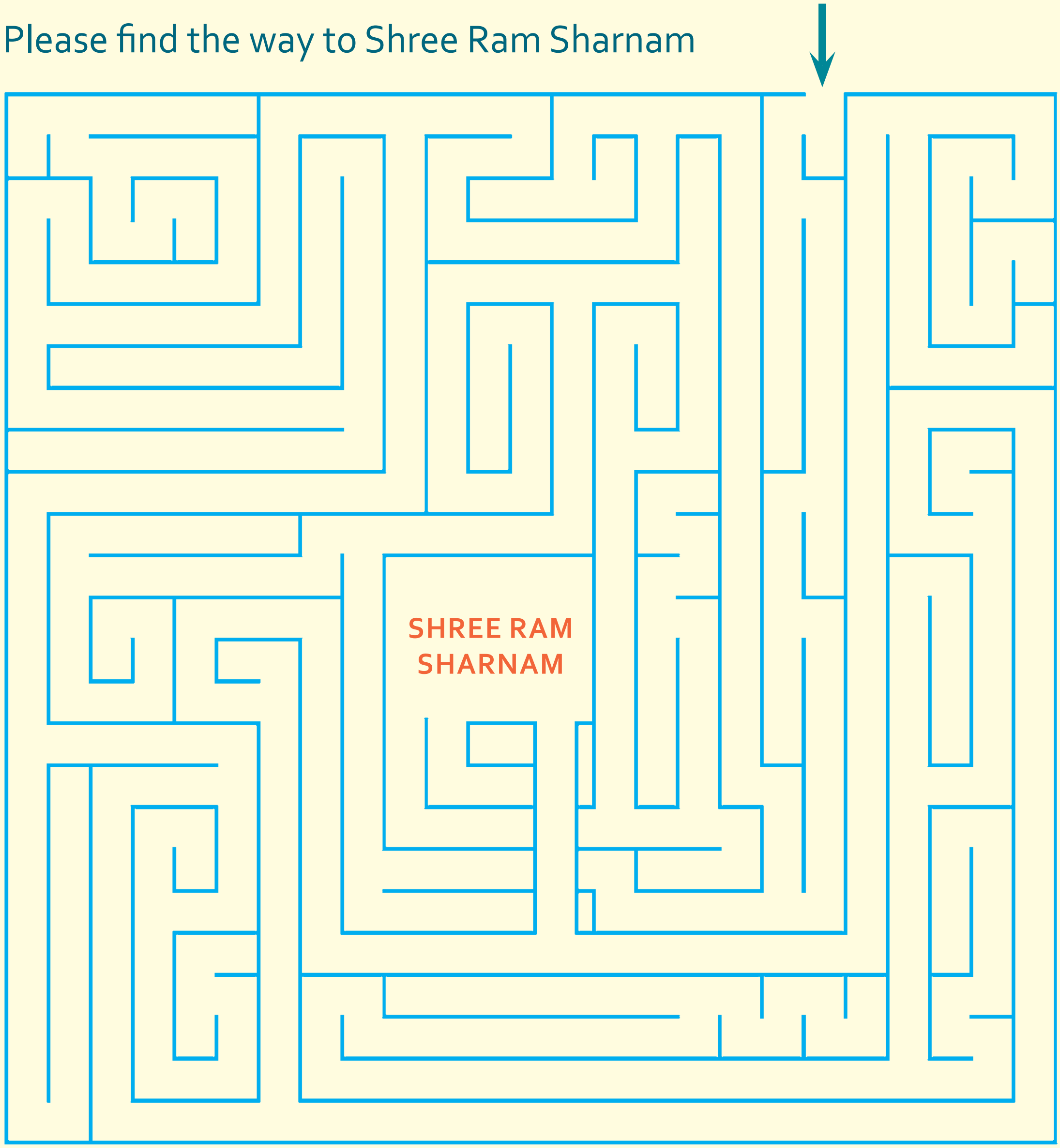

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642